

## ग्लोबल क्लाइमेट 2011-2020: WMO

### प्रलिस के ललल:

[वशिव ढौसड वजिजान संगठन](#), ग्लोबल क्लाइडेट 2011-2020: डकैड ऑफ एक्सीलरिशन, अल-नीनो घटना, [गरीनहाउस गैस \(GHG\)](#), [सडुदरी हीटवेव](#), [हडिनद](#)

### डेनुस के ललल:

ग्लोबल क्लाइडेट 2011-2020: WMO, डर्यावरण डुरदूषण और गरिावट

[सुरोत: द हदु](#)

### करुा डें करुुु?

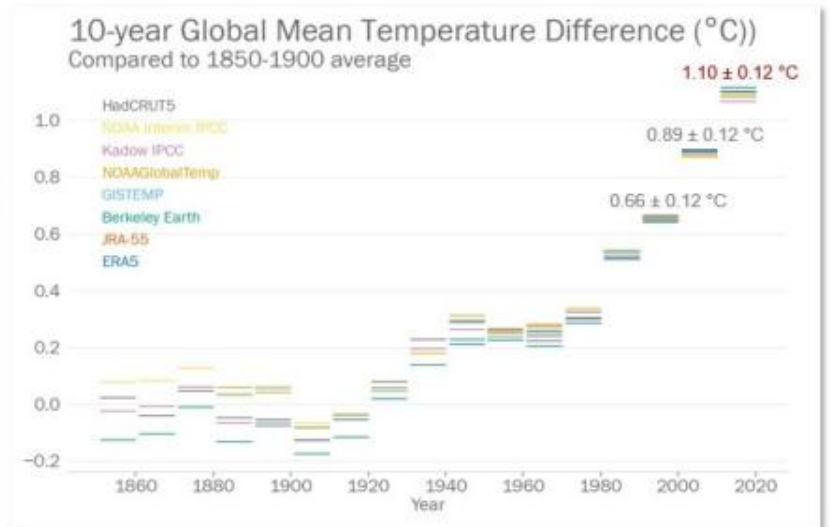
हलल ही डें [वशिव ढौसड वजिजान संगठन \(World Meteorological Organization - WMO\)](#) ने संपूरण गुरह डर जलवायु डरविरुतन के खतरनाक तुवरण तथल इसके डहुडुखी डुरडारुुु के संबंघ डें एक रडुडरुत डुरकरललतल की है, जसलकल शीरुषक [2011-2020: 2011-2020: 2011-2020](#) है।

### रडुडरुत से संबंघतल डुरडुख डदु क्यल हैं?

#### तलडडलन के रुडुडलन:

- 2011-2020 कल दशक डुडल तथल डुडलसलगर दुनुु के ललल रकुरुरुड सुतर डर सडसे गरुड दशक के रूड डें उडरल।
- वैशुवकल औसत तलडडलन 1850-1900 के औसत से **1.10 ± 0.12 डुगुरी सेलसयलस तक डदु गयल** है जो 1990 के दशक के डलद से डुरतुडेक दशक डें गरुडी डछलले दशक से अधकल रहल है।
- कई देशुु डें रकुरुरुड सुतर डर उरुुत तलडडलन दरुज कयल गयल, वरुष 2016 ([अल-नीनो घटना](#) के करलण) तथल वरुष 2020 सडसे गरुड वरुषु के रूड डें सलडने आए।

**2011-2020 warmest decade on record for both the land and ocean by a clear margin.**



- **ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन:**
  - प्रमुख ग्रीनहाउस गैसों (GHG) की वायुमंडलीय सांद्रता में वृद्धि जारी रही, विशेष रूप से CO<sub>2</sub>, 2020 में 413.2 ppm तक पहुँच गई, जो मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के दहन और भूमि-उपयोग परिवर्तनों के कारण थी।
  - इस दशक में CO<sub>2</sub> की औसत वृद्धि दर में वृद्धि देखी गई, जो जलवायु को स्थिर करने के लिये स्थायी उत्सर्जन में कमी की तत्काल आवश्यकता को उजागर करती है।
- **समुद्री परिवर्तन:**
  - महासागर के गर्म होने की दर में काफी तेज़ी आई, 90% संचित ऊष्मा समुद्र में जमा हो गई। वर्ष 2006-2020 तक ऊपरी 2000 मीटर की गहराई में वार्षिक दर दोगुनी हो गई, जिससे समुद्री पारिस्थितिक तंत्र प्रभावित हुआ।
  - CO<sub>2</sub> अवशोषण के कारण महासागर के अम्लीकरण ने समुद्री जीवों के लिये चुनौतियाँ पैदा कीं, जिससे उनके खोल और कंकाल का निर्माण प्रभावित हुआ।
- **समुद्री गर्म लहरें और समुद्र स्तर में वृद्धि:**
  - समुद्री हीटवेव की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई, जिससे वर्ष 2011 और 2020 के बीच समुद्र सतह लगभग 60% प्रभावित हुआ।
  - वर्ष 2011-2020 तक वैश्विक औसत समुद्र स्तर में 4.5 ममी/वर्ष की वृद्धि हुई, जिसका मुख्य कारण समुद्र का गर्म होना और बर्फ के बड़े पैमाने पर नुकसान है।
- **ग्लेशियर और हिम परत का नुकसान:**
  - वर्ष 2011 और 2020 के बीच वैश्विक स्तर पर ग्लेशियर लगभग 1 मीटर प्रतिवर्ष की कमी देखी गई, जिससे अभूतपूर्व जनहानि हुई, इससे पानी की आपूर्ति प्रभावित हुई।
  - वर्ष 2001-2010 की तुलना में ग्रीनलैंड और अंटार्कटिक में हिम परत में 38% से अधिक की गिरावट आई, जिसने समुद्र के स्तर में वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- **आर्कटिक सागर में बर्फ का कम होना:**
  - ग्रीष्म मौसम के दौरान आर्कटिक समुद्री बर्फ में घिसलना जारी रहा, जिसका औसत मौसमी न्यूनतम स्तर 1981-2010 के औसत से 30% कम था।
- **ओज़ोन छदिर और सफलताएँ:**
  - वर्ष 2011-2020 की अवधि में अंटार्कटिक ओज़ोन छदिर कम हो गया, जिसका श्रेय मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत सफल अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई को दिया गया है।
  - इन प्रयासों के कारण ओज़ोन-कषयकारी पदार्थों से समताप मंडल में प्रवेश करने वाले क्लोरीन में कमी आई है।
- **सतत विकास लक्ष्यों (SDG) पर प्रभाव:**
  - चरम मौसम की घटनाओं ने SDG की प्रगति में बाधा उत्पन्न की, जिससे खाद्य सुरक्षा, मानव गतिशीलता और सामाजिक आर्थिक विकास प्रभावित हुआ है।
  - प्रारंभिक चेताने वाली प्रणालियों में सुधार से प्रभावित लोगों की संख्या में कमी आई है, लेकिन चरम मौसम की घटनाओं से आर्थिक नुकसान बढ़ गया है।
  - 2011-2020 का दशक 1950 के बाद पहला दशक था जब 10,000 या उससे अधिक मौतों वाली एक भी अल्पकालिक घटना नहीं हुई थी।

## जलवायु और विकास लक्ष्यों पर कार्रवाई को मुख्यधारा में लाने के लिये WMO की सफ़ारिशें क्या हैं?

- अंतरराष्ट्रीय संगठनों और उनके भागीदारों के साथ सहयोग के माध्यम से वर्तमान एवं भविष्य के वैश्विक संकटों के खिलाफ सामूहिक समुत्थानशीलता को बढ़ाना।
- सहकरियात्मक कार्रवाई को आगे बढ़ाने के लिये विज्ञान-नीति-समाज संपर्क को मज़बूत करना।
- विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण/ग्लोबल साउथ के लिये राष्ट्रीय, संस्थागत और व्यक्तिगत स्तरों पर संस्थागत क्षमता निर्माण एवं क्रॉस-सेक्टरल व अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।
- राष्ट्रीय, उप-राष्ट्रीय और बहु-राष्ट्रीय स्तरों पर जलवायु एवं विकास सहकरियाओं को बढ़ाने के लिये सभी क्षेत्रों और विभागों के नीति निर्माताओं के बीच नीतिगत सुसंगतता एवं समन्वय सुनिश्चित करना।

## WMO क्या है?

- **परिचय:**
  - यह 192 सदस्य राष्ट्रों और क्षेत्रों की सदस्यता वाला एक अंतर-सरकारी संगठन है। भारत भी इसका एक सदस्य है।
  - इसका गठन अंतरराष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन (IMO) से हुआ, जिसकी स्थापना वर्ष 1873 यानि अंतरराष्ट्रीय मौसम विज्ञान कॉन्ग्रेस के बाद की गई थी।
- **स्थापना:**
  - 23 मार्च, 1950 को WMO कन्वेंशन के अनुसमर्थन द्वारा स्थापित WMO मौसम विज्ञान (मौसम और जलवायु), परिचालन जल विज्ञान तथा संबंधित भू-भौतिकी विज्ञान के लिये संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी बन गई।
- **मुख्यालय:**
  - जनिवा, स्वट्ज़रलैंड

